रुचि (Interest)

Notes रुचि शब्द अंग्रेजी भाषा के के (Interest) शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। (Interest) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द से (Interesse) के से हुई है। (It makes a difference)

रुचि की परिभाषा

1- विंथम के अनुसार - रुचि वह प्रवृत्ति है। जिसमें हम किसी अनुभव में उद्दीपन होकर उसे जारी रखना चाहते हैं।

मैग्डूगल के अनुसार " रुचि किया हुआ ध्यान है"

ड्रेवर के अनुसार - " रुचि किसी प्रवृत्ति का क्रियात्मक रूप है "

क्रो - एवं क्रो के अनुसार रुचि वह प्रेरक शक्ति है। जो हमें किसी व्यक्ति वस्तु या क्रिया के ध्यान के प्रति ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है।

रुचि के प्रकार

रुचि का निर्धारण मनोवैज्ञानिको ने अनेक प्रकार से किया है। कुछ विद्वानों का ऐसा मत है। रुचियों का सम्बन्ध आदतों से ये दो प्रकार की होती है।

1- जन्मजात रुचि
2 अर्जित रुचि

S.K. Sharma
20/9/2019

जन्मजात रुचि :- जन्म जात रुचियों से आशय मूल प्रवृत्तियों से बच्चों के खेलने कूदने, हसने आदि की प्रवृत्ति होती है।

माता पिता की रुचि सन्तान में
जैसे व्यक्ति की रुचि भोजन में
बालक की रुचि खेल से होती है।
इसी रुचि को जन्मजात रुचि कहते हैं।

आर्जित रुचि- भावनाओ सम्वेदनाओ से उत्पन्न एव आवश्यकताओ से रुचि को ~~आर्जित~~ आर्जित रुचि कहते है।

बालको मे रुचि ~~[illegible]~~ उत्पन्न करने की विधियाँ

निरन्तर मौखिक शिक्षण और अत्याधिक पुनरावृत्ति, पाठ को नीरस बना देती है। अतः शिक्षक को चाहिए वह बालको को प्रयोग निरीक्षण आदि के अवसर देकर कार्य में उनकी रुचि उत्पन्न करे।

1- आयु के साथ साथ बालको की रुचि में परिवर्तन होता जाता है। अतः शिक्षक को इन रुचियो के अनुकूल पाठ्य विषय का आयोजन करना चाहिए।

2 बालको को इन प्रवृत्तियों अभिवृत्तियो आदि से सम्बन्धित वस्तुओ में रुचि होती है। अतः शिक्षक को उनकी रुचि के अनुकूल विधि स्थूल पदार्थों आदि का प्रयोग करना चाहिए

3 निरन्तर एक विषय से पढने से बालक एक थकान का अनुभव करने लगता है। और उसमें रुचि लेना बन्द कर देता है। अतः शिक्षक को उनकी रुचि के अनुसार उसके विषय में परिवर्तन होता है।

4. बालक को जो कुछ पढाया जाता है। उसके मे तभी रुचि लेते जब उनको उसके उद्देश्य एवं उपयोगिता की जानकारी होती है। अतः शिक्षक को पाठ आरम्भ करने से पहले इन बातो का आवश्यक बता देना चाहिए।

DATE

5- शिक्षण के समय बालकों को विभिन्न वस्तुओं, पशुओं पक्षियों मशीनों आदि के रुचि उत्पन्न हो जाती हैं। अतः शिक्षक को उन्हे भ्रमण के लिए जाकर उनकी रुचियों को विकसित करना चाहिए।

पृच्छया अधिगम (सीखना)
(Inquiry Learning)

~~इसका~~ अनुभव ~~हम~~
हम सब का अनुभव है कि जब बच्चो के सामने कई नयी वस्तुये उपस्थित होती है। वे अपने से बड़े से प्रश्न करते है। यह क्या है। सामान्य जीवन में हम देखते है। जब को घटना घट जाती है। तो उस घटना के कारणो का पता लगाने के लिए सम्बन्धित लोग जानकारी ~~प्राप्त~~ एकत्रित करते हैं। सामान्य रूप मे इसी प्रक्रिया को पृच्छया अथवा (~~[illegible]~~) (पूछना) कहते हैं।

समस्या की उपस्थिति :- सर्वप्रथम छात्र के सामने समस्या उपस्थित की जाती है। अथवा यह स्वयं की किसी प्रकार की समस्या का अनुभव करता है। इसके पश्चात वह समस्या को स्पष्ट करता है। तथा उसके प्रत्येक पद (शब्द) की समस्या की व्याख्या करता है। और उसके हल की एक प्रक्रिया निश्चित करता है।

समस्या के सम्बन्ध में विभिन्न स्रोतो की जानकारी।

समस्या के कथन एवं उसके ~~स्रोतो की~~ शब्दो की व्याख्या करने के पश्चात वह उससे सम्बन्धित, जानकारी, विभिन्न व्यक्तियों, पुस्तको एवं

DATE

उस विषय में विख्यात विद्वानो से प्राप्त होती हैं करता हैं। इस जानकारी द्वारा समस्या के कारणों और उन्हे दूर करके के विषय को स्पष्ट ज्ञान प्रदान करता है।

प्राप्त जानकारी का सत्यापन-- इस अन्तिम पदपर छात्र समस्या से सम्बन्धित कारण एवं उसके हल करने से सम्बन्धित ज्ञान अथवा तथ्यों की सत्यता की समान परिस्थिति में जाँच करता हैं। जाँच के पश्चात जो तथ्य स्तप की कसौटी मे जो खरे उतरते है। उन्हे वह समस्या के सामाधान के तथ्य नियम अथवा सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत करता हैं।

अधिगम (सीखने) के स्तर
(Levels of Learning)

सीखना एक सतत प्रक्रिया हैं। इस प्रक्रिया में व्यक्ति सर्वप्रथम अपनी ज्ञानेन्द्रियो द्वारा किसी, बस्तु, तथ्य की अथवा विचार की जानकारी प्राप्त कर लेता हैं। इसके बाद उन्हे समझने का प्रयास करता है। अंत; मे परिस्थिति बश उसका प्रयोग करता है। सीखना तभी पूर्ण होता है। जब वह उसका प्रयोग करना सीख लें। सीखना एक मानासिक प्रक्रिया हैं। और मनोवैज्ञानिक मे इन मानासिक क्रियाओ के आधार पर इनको स्तरो में विभक्त किया हैं।

1- स्मृति स्तर का सीखना (Memory Level Learning)
2 अवबोध स्तर का सीखना (Understanding Level Learning)
3- चिन्तन स्तर का सीखना (Reflective Level Learning)

स्मृति स्तर का सीखना - जब सीखने वाला किसी वस्तु क्रिया तथ्य अथवा विचार को बिना सोचे समझे या उसका अर्थ समझे सीख लेता हैं। तो इस प्रकार का सीखना स्मृति स्तर का सीखना कहलाता हैं। इस प्रकार के सीखने मे व्यक्ति कोई विचार नही करता की वह क्या सीख रहा हैं। इसलिए इसे विचार हीन सीखना भी कहते हैं।

स्मृति स्तर के निम्नलिखित चार प्रक्रिया है।

1- ~~ग्रहण~~

1- ग्रहण (Perception)
2. धारण (Retention)
3- प्रत्यास्मरण (Recall)
4 पहचान (Recognition)

ग्रहण :- सर्वप्रथम सीखने वाला ~~व्यक्ति~~ किसी वस्तु क्रिया, तथ्य आदि का ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ~~होता है~~ कराया जाता हैं। इस क्रिया मे वस्तु क्रिया और तथ्य की प्रतिमाएँ अथवा चिन्ह उसके अचेतन मन मे संचित हो जाती हैं। इस क्रिया को मनोवैज्ञानिक ने इसे ग्रहण की है।

2. धारण :- व्यक्ति ज्ञानेन्द्रियो द्वारा प्राप्त वस्तु क्रिया अथवा तथ्य आदि के चिन्हो को कुछ समय तक मस्तिष्क में स्थिर रखता हैं। इस क्रिया को धारण कहते हैं। यह आपातकालीन से दीर्घ काल के लिये हो सकती है।

प्रत्यास्मरण :- धारण किये हुए ज्ञान को पुनः चेतन मन मे लाना प्रत्यास्मरण कहलाता हैं। यह क्षमता भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की भिन्न-भिन्न होती हैं।

पहचान :- धारण किये गये ज्ञान को चेतन मन मन मे लाकर उन्हे कुछ अनुभवो से जोडना उन्हे स्पष्ट समझकर अभिव्यक्त करना मनोवैज्ञानिक भाषा पहचान कहलाता है।

2- अवबोध स्तर सीखना :- जब व्यक्ति सोच-समझ कर किसी वस्तु क्रिया तथ्य अथवा विचार का ज्ञान प्राप्त करता है तो इसे अवबोध स्तर कहते हैं इस स्तर को सीखने के लिए व्यक्ति अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है और इस पर विचार करता है इस लिए इसे विचारपूर्ण सीखना भी कहते हैं।

1- सीखे गये ज्ञान को पूर्व ज्ञान पर सीखना
2. सीखे गये ज्ञान का विश्लेषण करना और उसमें कोई कार्य-कारण सम्बन्ध ढूढना
3. इसके पीछे तथ्य की खोज करना
4. इससे मिलते-जुलते तथ्यो का विभेद करना
5. अपने शब्दो में अभिव्यक्त करना
6- नवीन परिस्थिति में उपयोग करना

3- चिन्तन स्तर सीखना :- इस स्तर के व्यक्ति को सीखने के लिए चिन्तन करना होता है। अववोध स्तर के चिन्तन से आगे और उच्च चिन्तन करना इस स्तर के सीखने में किया जाता है। इस स्तर को सीखने में विचारों का परिणाम महत्वपूर्ण है। इस स्तर पर सीखना प्रायः समस्या केन्द्रित होता है। जिसमें स्मृति स्तर, अवबोधस्तर पर सीखना निहित होता है।

1- समस्या के स्वरूप को समझना
2. पूर्व ज्ञान के आधार पर समस्या के समाधान के लिए उपकल्पनाओं का निर्माण करना
3. एक एक उपकल्पनाओं के प्रयोग द्वारा सत्यता की जाँच करना
4- समस्या समाधान के लिए उपयुक्त परिकल्पनाओं की पुनः जाँच करना।